यहां दरिया नर्बदा के किनारे पहाड़ी पर एक बहुत पुराना ओंकार जी का मन्दिर है ज़िले का सब से बड़ा मेला कार्तिक पूर्णमाशी के दिन इस मन्दिर पर होता है जिस में दस हज़ार के क़रीब लोग आते हैं साल के और दिनों में दस यात्री पवित्र दरिया नर्बदा में स्नान करने यहां आते रहते हैं और बाजे उन में से श्रावण का सारा महीना यहां रहते हैं ॥

मोर्तक्का स्टेशन पर ओंकारजी जाने के लिये बैल. गाड़ियां मिलती हैं ॥

ओंकार जी में एक धर्मशाला भी है पर यात्री लोगों को पांडे अपने घरों में उतारते हैं ॥

---

## ओखला ।

यह स्टेशन जी० आई० पी० रेलवे में दिल्ली से ६ मील है। दरिया और गांव के सबब जो आगरा दिल्ली नहर के सिरे पर है इस गांव का नाम ओखला होगया है नहर स्टेशन से दो मील परे जमना जी से निकली है। जमना जी के बीच में यहां बंद लगाया है जिस से गरमी के दिनों में सारा पानी नहर में ले आते हैं, यहां धरती पार्क याने सैरगाह की तरह बनाई हुई है और वहां एक दो खूबसूरत बंगले हैं। स्टेशन के पास ही कालका जी के मन्दिर हैं जहां यात्री लोग सारा साल आते रहते हैं कुतब साहब की लाठ रेल में से दिखाई देती है और उस के गिर्द दूर तक महलों और कबरों के खंडर फैले हुए हैं जो हिन्दुस्तान में बलकि सारे जगत् में अजीब हैं ॥

दिल्ली से ओखले तक तीसरे दर्जे का किराया ↄ) है ॥
यात्रियों के लिये यहां कई धर्मशाला हैं ॥

## ओट्टनकाडू ।

साऊथ इण्डियन रेलवे की तंजौर डिस्ट्रीक्ट शाख़ पर मदरास बीच स्टेशन से २५५ मील के फ़ासले पर स्टेशन और गांव है। गांव स्टेशन से २ मील के फ़ासले पर है यहां से २॥ मील थीरुचितम्बलम गांव है जो बड़े तीर्थ की जगह है इस गांव में फ़रवरी के महीने में तैरने का मेला और जून में रथ यात्रा का मेला होता है हज़ारों लोग इन मेलों में आते हैं ॥

यहां से थोड़े फ़ासले पर दो गांव हैं जिन में आठवें दिन मेले होते हैं ॥

ओट्टनकाडू में लोगों के ठहरने के लिये एक चत्तरम है ॥

मदरास बीच स्टेशन से ओट्टनकाडू तक तीसरे दरजे का किराया २॥।) लगता है ॥

ओट्टनकाडू में बैलगाड़ी की सवारी ) फ़ी मील के हिसाब से मिलती है ॥

---

## काकोरा ।

सूबा आगरा और अवध के बदाऊं ज़िले और बदाऊं तहसील में छोटा सा गांव है जो गंगा जी के किनारे के पास बदाऊं शहर से १२ मील के फ़ासले पर वाक़े है ॥

कार्तिक के महीने में यहां बड़ा भारी मेला होता है जिसके सबब यह गांव बहुत मशहूर है इस मेले पर दिल्ली, कानपूर, फ़र्रुख़ाबाद और रुहेलखण्ड के और हिस्सों से एक लाख के क़रीब लोग आते हैं, गंगाजी में स्नान करने के बाद यात्री ब्योपार में लग जाते हैं। मिठाई, फल, खाने पकाने के बर्तन, जूतियां, कपड़ा और असबाब का लेन देन होता है हर चीज़ के लिये अलग बाज़ार लगता है ॥

बदाऊं में यक्के और गाड़ियां सवारी के लिये मिलती हैं पर अकसर यात्री लोग शेखुपुर स्टेशन पर उतर कर काकोरीको पैदल जाते हैं ॥

काकोरी में कोई सराय या धर्मशाला नहीं लोग टिकने का आप बन्दोबस्त करते हैं ॥

शेखुपुर रुहेलखंड कुमाऊं रेलवे का स्टेशन लखनऊ से २२६ मील है तीसरे दर्जे का किराया ३) लगता है ॥

---

## कानपुर ।

सूबा आगरा और अवध में बड़ा शहर, छावनी और सिवल स्टेशन और बड़े व्योपार की जगह है यहां चार रेलें ईस्ट इंडियन, अवध रुहेलखंड, ग्रेट इंडियन पेनिनशुला और बंगाल ऐंड नार्थ वैस्टरन मिलती हैं। लखनऊ जाने वाले मुसाफ़िरों को यहां गाड़ी नहीं बदलनी चाहिये पर ईस्ट इंडियन रेलवे पर जानेवालों को अवध रुहेलखंड के कानपुर स्टेशन पर गाड़ी बदलनी चाहिये। सन् १८५७ में यहां बड़ा भयानक ग़दर हुआ था इस वास्ते यह शहर और भी मशहूर है जहां जनरल वीलर साहिब का मोर्चा था वहां एक यादगार में सुन्दर गिरिजा बना हुआ है, क़त्ल की जगह दरिया के किनारे पर है और जिस कूऐं में मारकर लोथें डाली गई थीं उस पर दूत की खूबसूरत मूर्त है इर्द गिर्द बहुत अच्छे बाग़ हैं ॥

छावनी और सिवल स्टेशन गंगाजी के दाहने किनारे पर हैं और देसी बस्ती खुशकी की तरफ़ दक्खिन पश्चिम को है। इलाहाबाद की सड़कपर पूर्ब की तरफ़ से चलें तो पहिले घोड़दौड़ का मैदान आता है उसके बाद पश्चिम की तरफ़ रिसाले की बारगें हैं और इस के पीछे फ़ौजों के क़वायद करने का मैदान आता है । इस मैदान

के आगे उत्तर पूर्व की तरफ अंग्रेज़ी पलटन की बारगें हैं। छावनी और दरिया के बीच में मिमोरियल (यादगार) गिर्जा, कलबघर, तोपखाना और फौजी दफ़तर हैं॥ माल याने ठंडी सड़क छावनी से कैहरीन, हस्पताल, मरे अजनसी, कानपुर सपलाई असोसिएशन, कमरशल बिलडिंगस और और बड़ी बड़ी देसी और पारसी दूकानों के पास से गुज़रती है दाहिनी तरफ़ मलका का बाग़ है जिस में मलका का कांसी का बड़ा बुत है इस के दूसरी तरफ यादगार बाग़ है जिस में मशहूर कूंवा है। आगे पश्चिम की तरफ सिवल स्टेशनहै जिस में बङ्गाल बैंक, क्राइस्ट का गिर्जा, बड़ा डाकखाना, शिमले का अलाय्य र बैंक, इलाहाबाद बैंक, चेम्बर आफ़कामर्स (ब्योपार की कमेटी) बिलडिंगस और अंग्रेज़ों के मकान हैं॥

कोठियां कारखाने पश्चिम की तरफ हैं और उन के उत्तर की तरफ गंगा है इन में से बड़े २ कारखाने यह हैं मूइरमिल, कानपुर ऊनी कपड़े की ऐलजिन की कल, कानपुर रुई की कल विकटोरिया कल, एम्पायर बारगमास्टरी का कारखाना, बुर्श बनानेका कारखाना, चमड़े का कारखाना, चीनी का कारखाना और कई आटे और रुई निकालने की कलें हैं॥

पादरियों के मिशन स्कूल और हस्पताल भी हैं॥

पुराना कानपुर ३ मील परे दरिया के किनारे पर है इस के और नए शहर के बीच में खेत और बाग़ हैं॥

यह शहर सूबा आगरा और अवध में चौथे दर्जे पर है इस का रक़बा ६०७६ एकड़ है॥

ई० आई० आर के स्टेशन से आधे मील के फासले पर लाला बैजनाथ रामनाथ सिंघानिया की धर्मशाला है और स्टेशन से उत्तर पश्चिम की ओर स्टेशन से ४०० गज़ के फ़ासले पर लालातुलसीराम

शिवप्रशाद की धर्म्मशाला है मुसाफिरों से किराया नहीं लिया जाता खाना भी मामूली दामों में मिलजा ता है॥

कानपुर कलकत्ते से ६३३ मील और तीसरे दर्जे का किराया ५॥॥≈)॥। है बम्बई से जी० आई० पी० रेलवे में ८३६ मील और तीसरे दर्जे का किराया सवारी गाड़ी में ६॥≈) और डाक गाड़ी में १३≈) है॥

---

## कांगड़ा।

पंजाब के जिला कांगड़ा में एक नगर है और पहले कटोच राज्य की राजधानी था पिछले जमाने में इस को नगर कोट कहते थे। पुराना नगर एक पहाड़ी के दखनी ढलाओ पर बसा हुआ है और इर्द गिर्द की बस्ती और भवन और देवी का मशहूर मन्दिर उत्तर के ढलाओ पर वाके हैं असल में कांगड़ा क़िले का नाम था जो एक सीधी चट्टान पर बानगंगा के ऊपर खड़ा है॥

कटोच राजे कांगड़े पर बहुत पुराने वक़्तों से अंगरेज़ों के आने तक राज करते रहे यहां मुग़लों के राज्य में आजकल से बहुत जियादा आबादी थी कांगड़े का देवी का मन्दिर हिन्दुस्तान देश में सब से पुराना और धन वाला था परन्तु अपरैल १६०५ के भौंचाल से तबाह हो गया इस भौंचाल से कांगड़े के ज़िले में जान और माल का बड़ा नुक़सान हुआ। ज़िले का हेड कुआर्टर १८५५ में धर्मशाला बदल गया तब से कांगड़े में वोह रौनक़ नहीं रही॥

कांगड़ा चांदी के ज़ेवर और मीनाकारी के लिये बहुत मशहूर है यहां एक सराय भी है॥

किले में गोर्खा पलटन का जो धर्म्मशाला में रहती है एक दस्ता रहता है यहां पादरियों का बड़ाभारी मिशन है॥

कांगड़े जाने के लिये नार्थ वैस्टर्न रेलवे की अमृतसर पठानकोट शाख के पठानकोट स्टेशनपर उतरना चाहिये वहां तांगे और यक्के किराये पर मिलते हैं ॥

पठानकोट अमृतसर से ६७ मील है तीसरे दर्जे का किराया ॥I)॥ लगता है। कांगड़े में धर्म्मशाला भी है ॥

## कामाखिया ।

आसाम देशके कामरूप जिले में गौहटी से २ मील ब्रह्मपुत्र दरिया के किनारे पर पहाड़ी है । चोटी पर बड़ा नामी कामाखिया या दुर्गा का मन्दिर है, इसी मन्दिर के सबब पहाड़ी का नाम कामाखिया होगया है । इस मन्दिर के बड़े मेले यह हैं। पुरुष दवाना जो जनवरी के महीने में देवी और कामेश्वर देवता के विवाह रचाने का होता है। मनसापूजा का मेला अगस्त में और आद्धपूजा का मेला सितम्बर में इन सब मेलों पर अनगिनत लोग आते हैं ॥

गौहटी स्टेशन के पास डाक बंगला है । और डेढ़ मील के करीब धर्म्मशाला है। एक बंगाली होटल भी है। पर यात्री लोग अकसर प्रोहतों के घरों में ठहरते हैं। यक्के गाड़ियां किराये पर मिलती हैं पहले घण्टे का किराया १) और उस बाद ॥) फ़ी घण्टा लगता है ॥

गौहटी आसाम बङ्गाल रेलवे पर चिट्टागांग से ४८० मील है तीसरे दरजे का किराया ७॥) लगता है ॥

## कामरूप ।

तीर्थ आसाम में है इस की बाबत मशहूर है कि श्री

भगवान् जी ने कामदेव को इस जगह पर भसम कर दिया था इस वास्ते इस जगह का नाम कामरूप हो गया है। और ब्रह्मा जी ने इस जगह बैठ कर चांद तारे वग़ैरा बनाए थे इस वास्ते इस जगह का दूसरा नाम प्राग ज्योतिषपुर है। कहते हैं कि उस ज़माने में यहां जादू बहुत होता था ज्योतिष का इलम यहां बनाया गया था। पुराने ज़माने में यहां बहुत तीर्थ थे अब वह बाक़ी नहीं रहे। इस जगह देवी का मन्दिर है जहां पर दसहरे के दिनों में बड़ा भारी मेला होता है॥

कामरूप से आध कोस के फ़ासले पर कामिख्या देवी का मन्दिर है यहां एक छोटासा पर्वत है उस पर भी एक मन्दिर है।

कामरूप पहुचने के लिये ई० बी० ऐस० रेल में गवालन्दो स्टेशन तक वहां से अगनबोट पर गौहटी जाना चाहिये गौहटी से कामरूप तक बैल गाड़ी जाती है॥

गवालन्दो स्टेशन कलकत्ते से १५५ मील है। और तीसरे दरजे का किराया १।||=)। है॥

---

## कारागोला ३

बङ्गाल के ज़िले पूर्निया में गांव है जो गंगाजी के बायें किनारे पर बसा हुआ है। यह गांव एक बड़े मेले के सबब बहुत मशहूर है जो पहले गंगाजी के दूसरे किनारे पर पीरपैंती ज़िला भागलपूर में होता था पर १६ वीं सदी के शुरू में पुर्निया आगया और फिर होते होते १८५१ से बराबर कारागोला में होता है। मेला दस दिन रहता है इन दिनों में मेले की जगह पर बांस और चटाई की दुकानें लग जाती हैं और कपड़े खाने पकाने के बरतन और कम्बलों का बड़ा ब्योपार होता है॥

कारागोला बङ्गाल नार्थ वैस्टरन रेलवे का स्टेशन है और कानपूर से ५११ मील है तीसरे दरजे का किराया ४।≈) लगता है ॥

---

## कारला।

जी० आई० पी० रेलवे पर एक स्टेशन है बम्बई से ८५ मील है। और तीसरे दरजे का किराया १।-) लगता है ॥

स्टेशन से डेढ़ मील के फ़ासले पर कारली गांव और ३ मील खोहें हैं। बैल गाड़ी पहले से इन्तज़ाम करने से मिल सक्ती है। कारली की खोहें हिन्दुस्तान में सब से अच्छी हैं और अच्छे हाल में हैं। यह उस ज़माने की बनी हुई हैं जब इमारत की बनावट का ढंग बहुत अच्छा था। तामीर के जितने पहले नुक़्स थे इन खोहों में ठीक कर दिये गये थे। तर्ज़ ऐसे कमाल को पहुंची हुई है कि फिर इस से कभी नहीं बढ़ी। स्टेशन के पीछे थोड़े फ़ासले पर ट्रावनकोर के मशहूर मुसव्विर का रावीवर्मा छापाख़ाना है जो इस ग़रज़ से क़ायम किया गया है कि देसियों को भी इस हुनर की तरफ़ ख़्याल हो। इस छापेख़ाने में काम बहुत अच्छा होता है देवताओं की भी तसवीरें बनती हैं इस छापेख़ाने से एक मील दक्षिण की तरफ़ भोज की खोहें हैं जिन में कई पुराने ज़माने की संगतराशी के काम हैं। दो पुराने मरहट्टों के क़िले लोहागढ़ और बीजापुर खोहों के ऊपर बड़ी शान से खड़े हैं और देखने के क़ाबिल हैं ॥

---

## कालाहस्ती।

मदरास आहाते के ज़िले शुमाली अरकाट में स्वर्णमुखी दरिया के दक्खनी किनारे पर एक नगर और साऊथ इण्डियन रेलवे का स्टेशन है। मदरास बीच जंकशन से २८६ मील तीसरे दर्जे का किराया ३≈) है

इस नगर को श्रीकालाहस्ती भी कहते हैं यह बड़ी तीर्थ की जगह है और यहां के लोग इस को काशी जी से कम नहीं समझते मार्च के महीने में शिवरात्री तेहवार पर यहां बड़ा भारी मेला होता है जो दस दिन तक रहता है यहां पर पारवती जी का बड़ा भारी मन्दिर है और एक शिव जी का मन्दिर है जिस में पांच चेहरे वाली मूर्त्ति है। अचम्भे की बात यह है कि हवा के अन्दर जाने को कोई रस्ता नहीं पर मूर्त्ति के ऊपर जो दीया जलता है हर वक़्त हिलता रहता है। इस मन्दिर के सबब से यह नगर बहुत मशहूर है। नगर के अन्दर एक चौक है जिस में मकान बने हुये हैं और जिस के गिर्द चार चौड़ी २ सड़कें हैं ॥

इस नगर के आसपास कपड़ा बहुत बनता है और अनाज और चूड़ियों का बहुत व्यौपार होता है ॥

नगर स्टेशन से डेढ़ मील के क़रीब है। स्टेशन पर गाड़ी के वक़्त बैल गाड़ियां मिलती हैं जिन का किराया दो आने से तीन आने फी गाड़ी लगता है ॥

यहां ३ चोलत्रियां और ४ या ५ देसी होटल हैं जिन में ॰)॥ को एक वक़्त का खाना मिलता है ॥

## कालिंजर ।

सूबा आगरा और अवध के जिला और तहसील बांदा में बांदा शहर से ३३ मील दक्खिन की ओर एक नगर और बड़ा नामी पुराना पहाड़ी क़िला है। यह किला बुन्धेलखण्ड में सब से पुराना है और इस की बाबत महाभारत और शिवपुरान में लिखा है कि यह स्थान ६ उत्कलों में से है यहां से पानी निकलेगा और अन्त सारे जगत् को नष्ट कर देगा। इस जगह एक ताल है जिस

की बाबत महाभारत में है कि जो कोई इस देवताओं के ताल में स्नान करेगा उसे हज़ार गौदान करने का पुण्य होगा ॥

तेहवार और मेलों के दिनों में यात्री दूर दूर से आते हैं इस नगर के ७ दरवाज़े हैं। बड़े दरवाज़े के बाहर एक ढलवान गढ़ा है जिस में से रस्ता सीता सेज को जाता है इस सेज को राम सेज्जा भी कहते हैं इस के अन्दर छोटी सी कोठड़ी में एक पत्थर का पलंग है कहते हैं इस पर सीता जी ने लंका से लौट कर बिश्राम किया था ॥

कोटतीर्थ (करोड़ तीर्थ का बिगड़ा हुआ है) मृगधारा नीलकण्ठका मन्दिर जिस में और लिंगों के सिवाय नीलकण्ठ महादेव का बड़ा लिंग है और कई खोहें देखने के लायक़ हैं। मृगधारा सात पत्थर के मृगों के सबब बड़ी नामी जगह है यह मृग ऋषि थे पर अनआज्ञाकारी के सबब अपने गुरू के श्राप से अगले जन्म में दशरन जंगल में बहेलिये या चिड़ीमार बन गये उस से अगले जन्म में कालिंजर में मृग बने फिर लंका में चकवा चकवी उस के पीछे मानसरोवर झील में राज हंस और सब से पीछे कुरुक्षेत्र में ब्राह्मण बने और उन की मुक्ति हुई ॥

कालिंजर में और पहाड़ों के नीचे मुसलमानों की बहुत क़बरें हैं ॥

कालिंजर की आबोहवा और नज़ारा बहुत अच्छा है।

कालिंजर बदौसा स्टेशन से जो जी० आई० पी० रेलवे की झांसी मनिकपुर शाख़ पर है १८ मील है बन्दोबस्त करने से टट्टू और बैल गाड़ियां किराये पर बदौस में मिल सकती हैं गाड़ी का किराया दो आने और टट्टू का एक आना मील के हिसाब से लगता है। कालिंजर में एक सराय, एक धर्मशाला और एक सरकारी बंगला है ॥

बदौसा झांसी से १४५ मील और बम्बई से ८४७ मील है तीसरे दरजे का किराया बम्बई से डाकगाड़ी में १३) और सवारी गाड़ी में ६॥।=) और झांसी से २) लगता है ॥

---

## कावेरी ।

जनूबी हिन्दुस्तान का बड़ा दरिया है जो आबपाशी खूबसूरत नज़ारे और पवित्रपन के सबब बहुत मशहूर है हिन्दू लोग इस को दक्षिण गंगा या दक्षिण की गंगा कहते हैं और उनके खियाल में यह दरिया शुरू से आखीर तक सब जगह पवित्र है। अग्नि और स्कंदा पुराणों में लिखा है कि एक दफा इस प्रथ्वी पर ब्रह्मा की लड़की विष्णुमाया या लोपामुद्रा ने जन्म लिया पर वह अपने पिता की आज्ञा से कावेरा मुनी (एक मनुष्य) की लड़की कहलाने लगी। लड़की ने अपने धारे हुए बाप को आनन्दित करने के लिये दरिया बन जाने का जिस के पानी से सारे पाप नाश हो जायें इरादा किया, इसलिये पवित्र गंगा जी भी साल में एक दफा धरती के नीचे २ कावेरी के निकास तक पहुंचती है ताकि जो गन्दे पापियों के न्हाने से उस में हो गया उससे पवित्र होजाये तला कावेरी जहां से दरिया निकलता है और भाग मण्डला पर पुराने मन्दिर हैं जहां हर साल तुल सक्रान्ति (अक्तूबर नवम्बर) में अनगिनत लोग यात्रा के लिये जाते हैं ॥

मैसूर रियासत में कावेरी के दो जज़ीरे से रंगापटम और शिवासमुद्राम तीर्थ हैं जो त्रिचनापली के ज़िले में श्रीरंगम से कम नहीं ॥

शिवासमुद्राम जज़ीरे के गिर्द कावेरी की मशहूर आबशार हैं जो अपनी अनऊठी खुबसूरती में लासानी हैं। यहां पर दरिया

की दो धारें होजाती हैं जिन में से हर एक २०० फीट नीचे गिरती है । वहां तक दो पुलों के रस्ते से जिन को एक मैसूर के रहने वाले ने अपने खर्च से बनवाया है पहुंच सकते हैं ॥

कावेरी पर यह स्टेशन हैं ॥

(१) सेरंगापटम सदर्न मरहट्टा रेलवे पर बंगलोर शहर से ७७ मील तीसरे दरजे का किराया सवारी गाड़ी में ॥)॥ है ॥

(२) पश्चिमवाहिनी बंगलोर से ७८ मील किराया ॥~) है।

(३) त्रिचनापली साउथ इण्डियन रेलवे पर मदरास से २५१ मील किराया २॥~) है ॥

(४) इरोद मदरास रेलवे पर मदरास से २४३ मील किराय २॥~) है। यह सब मुक़ाम बहुत पवित्र माने जाते हैं ॥

---

## काशगंज ।

रुहेलखण्ड कुमाऊं और बी० बी० ऐण्ड सी० आई० रेलवे यहां आकर मिलती हैं। सोरन एक पुराना शहर और रुहेलखण्ड कुमाऊं का स्टेशन यहां से ६ मील के क़रीब है और यात्रा के मेलों के लिये बहुत मशहूर है। यात्री लोग बड़गंगा दरिया में स्नान करने के वास्ते अकसर आते हैं। दरिया का पानी यहां बहुत जमा रहता है और उसके गिर्द खूबसूरत मन्दिर और घाट बने हुए हैं। काशगंज लखनऊ से २६३ मील है तीसरे दरजे का किराया २।~)॥। लगता है ॥

---

## काशीपुर ।

जिला नैनीताल में एक मिउनिसिपल क़सबा है जो नैनातला

से ४५ मील है और सब से नज़दीक स्टेशन काठगोदाम है जहां रुहेलखण्ड कुमाऊं रेलवे खतम होता है । जिला नैनीतालका सब से बड़ा मेला मार्च के आखीर में काशीपुर से तीन मील के फासले पर बलसुन्दरी देवी का होता है। और १५ दिन तक रहता है मेला चेत की पहिली तारीख को मन्दिर पर शुरू होता है और १० दिन के बाद काशीपुर बाजार आजाता है। ७०००० के करीब लोग जमा होते हैं और पशुओं, गाड़ियों, किसानों के औज़ारों और और चीज़ों का बड़ा व्योपार होता है। इस मौक़े पर जूआ बहुत होता है।

द्रोनासागर नदी के पश्चिमी किनारे पर कई छोटे छोटे मन्दिर हैं, काशीपुर और क़िले के पास बहुत से ताल हैं जिन में से सब से बड़ा द्रोनासागर है जिसको कहते हैं पांच भाई पाँडों ने अपने उस्ताद द्रोना के लिये बनाया था यह ताल ६०० फीट लम्बा चौड़ा है इस को हिन्दू लोग बहुत पवित्र मानते हैं और गोत्री जाने वाले यात्री इस के दर्शन करते हैं॥

काठगोदाम बरेली से ६६ मील और तीसरे दरजे का किराया १॥) है॥

---

## कासारा।

जी० आई० पी० रेलवे पर बम्बई से ७५ मील के फासले पर एक स्टेशन है बम्बई से तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में १७) और सवारी गाड़ी में ॥।-) है । स्टेशन पर वेटिंग रूम बनाहुआ है और गांव में देशी मुसाफिरों के लिये धर्मशाला है। कासारा से गुज़र कर थल घाट की चढ़ाई ज्यादा होती जाती है, और कासारा और इगतपुरी के बीच में १० मील के फासले में चढ़ाई समुद्र से १०५० फीट होजाती है। तीन सुरंग गुजरने

पड़ते हैं और साढ़ेचार मील सफर करने के बाद रीवरसिंग स्टेशन आता है यह स्टेशन लैन ठीक रखने के लिये बनाया गया था यहां आकर गाड़ी उलटी होजाती है याने इंजन पीछे से आगे आजाता है। इस स्टेशन से चलकर ६ सुरंगे और हिन्दुस्तान में सब से ऊंचा पुल आता है गाड़ी में बैठे मुसाफिर को पुल पर से १६० फीट नीचे खण्ड दिखाई देता है॥

## कुलीतलई।

साऊथ इण्डियन रेलवे पर मद्रास बीच स्टेशन से २७४ मील के फासले पर है। तीसरे दरजे का किराया ३-) लगता है। यह नगर त्रिचनापली जिले में कुलीतलई तालुक का सदरमुकाम है॥

यहां जनवरी के महीने में हरसाल बड़ाभारी मेला होता है जो पुशयम मेला कहलाता है॥

## कृष्णा।

जी० आई० पी० रेलवे पर बम्बई से ४२७ मील है सवारी गाड़ी में तीसरे दरजे का किराया ४।≥) है॥

यह नगर कृष्णा दरिया के किनारे पर वाक़े है जिसको हिंदू लोग पवित्र मानते हैं और मुसाफिर इस में स्नान करने के लिये गाड़ी से यहां उतरते हैं। दरिया पर ३८५४ फीट लम्बा पुल बना हुआ है। स्टेशन के पास एक अच्छी धर्मशाला बनीहुई है॥

## कृष्णाराजपुरम।

यह मद्रास रेलवे का स्टेशन बैंगलोर शहर से ६ मील के फासले पर वाक़े है तीसरे दरजे का किराया सवारी गाडी में-)॥ डेढ़ आना है॥

स्टेशना के पास मुसाफिरों के आराम के वास्ते एक चत्तरम है। करीब ३ मील द्. खन पश्चिम की तर्फ उलसूर नगर है जहां झील उलसूर के किनारे पर एक बहुत पुराना मन्दिर है, जिस के दर्शन को हरसाल हजारों यात्री आते हैं। मन्दिर के पास भी एक चत्तरम है। यह स्टेशन मद्रास से २११ मील है और तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में २॥) और सवारी गाड़ी में २) है॥

---

## केदारनाथ ।

गढ़वाल रियासत में है। यह हिमालय पर्वत की एक बर्फानी चोटी का जो २२८५३ फीट ऊंची है, और एक बड़े मशहूर मन्दिर का नाम है जो इस चोटी की ढाल पर बना हुआ है। कहते हैं कि यहां पर शिवजी के एक अवतार ने बहुत लड़ाइयों के बाद अपना पीछा करने वाले पाण्डुओं से बचने के कारण धरती में गोता मारा था। उनकी दे का नीचे का हिस्सा एक पहाड़ी की सूरत में जो पवित्र मानी जाती है धरती के ऊपर रहगया और बाक़ी हिस्से इधर उधर और जगह चले गये। मन्दिर के पास एक टीला है जो भैरवझम्प के नाम से मशहूर है। यहांपर यात्री लोग मुक्ति हासिल करने के कारण गिर कर आत्मघात किया करते थे। पर अंग्रेजी सरकार ने यह रसम बन्द करदी। किदार नाथ के पास ४ मन्दिर और हैं जो सब मिलकर पांच किदार कहलाते हैं इन सब के दर्शन किये जाते हैं क्योंकि कहते हैं कि शिवजी की देह के बाकी हिस्से इन में हैं। किदारनाथ में एक बड़ा लिंग है॥

यहां कई सदावर्त और धर्मशाला हैं और दुकानें भी हैं। हरिद्वार से झम्पान सवारी के लिये मिलते हैं। रास्ते में और बहुत तीर्थ आते हैं॥

हरिद्वार सहारनपुर से ४६ मील है और कलकत्ते से ६२१ मील है तीसरे दरजे का किराया ॥≈)। और ८॥।≈) लगता है ॥

---

## कैथल।

पंजाब के जिला करनाल में एक पुराना नगर और म्यूनी-सपैलिटी है और करनाल से ३८ मील के फासले पर वाक़े है, यह नगर एक आप बनाई हुई बड़ी झील के किनारे पर बसा हुआ है और इस झील के ऊपर बहुत से घाट और सीढ़ियां बनी हैं। कहते हैं कि इस नगर को राजा युधिष्ठिर ने बसाया था और हनुमान्जी के साथ भी इसका लगाओ है। संस्कृत में इस जगह को कपीस्थल या बन्दर का घर कहते हैं। और यह नाम अब भी चला जाता है। अकबर के राज्य में इस नगर को फिर ठीक करके यहां एक किला बनाया गया। १७६७ में यह एक सिक्खसर्दार देसुसिंहके हाथ आगया इस सर्दार का बंश कैथल के भाई कहलाते थे और सतलुज के पार के सब सर्दारों से जोरावर थे, १८४३ में उनका सारा इलाका सर्कार अंग्रेजी के पास आगया ॥

इस नगर में थोड़ासा चने, पशुओं और क़म्बलों का ब्योपार होता है लाख के खिलौने और जेवर बनते हैं यहां ऐक्सटरा असि-स्टंट कमिश्नर की कचहरी, तहसील, थाना, अस्पताल, मदरसा और एक सराय है ॥

कैथल सदरन पंजाब रेलवे का स्टेशन है दिल्ली से १२४ मील और तीसरे दरजे का किराया १।≈)। है करनाल से कैथल ऍ थके जाते है ॥

## केंदूलो ।

अहाता बंगाल के ज़िला बीरभूम में गांव है जो अजई नदी के किनारे पर आबाद है, यहां संस्कृत के कवि और विष्णुमत के सुधारने वाले चैतान्या के चेले जैयादेवा ने जन्म लिया था चैतान्या ने संस्कृत की मशहूर गोविंद गीता कृष्ण जी की तारीफ़ में लिखी थी। माघ के आख़िर दिन (फ़र्बरी के शुरू में) इस गांव में जैयादेवा की यादगार में एक बड़ा भारी मेला लगता है. जिस में ५०००० से भी ज़ियादा लोग आते हैं॥

## कैलास पर्ब्ब ।

अटक और सतलुज के निकास के पास हिमालया पहाड़ के बीच में सर्कार अंग्रेजी की हद के बाहर २०२२६ फ़ीट ऊंचा एक पर्ब्बत है जिस को संस्कृत की किताबों में शिवजी का स्वर्ग लिखा है। दूर होने के सबब यात्री लोग कम जाते हैं फिर भी बहुत से लोग इस पर्ब्बत पर जाकर अपने दिन पूरे करते हैं॥

इस के दक्खिन पशिचमी कोने में मानसरोवर झील है जिस की बाबत यूं कहते हैं कि यह उन चार झीलों में से है जिन में से देवता पानी पीते हैं॥

## कोएम्बाटोर ।

मद्रास रेलवे पर ज़िला कोएम्बाटोर का बड़ा क़सबा है और कलकटर का सदर मुक़ाम है। यहां काफ़ी तैय्यार करने के कई कारख़ाने हैं इस जगह से तीन मील परूर का मन्दिर है जिस के दर्शन को मलायालम और और जगह से यात्री आते हैं। यहां रुई कातने और कपड़ा बनने के कारख़ाने भी हैं॥

इस नगर में और पस्र में कई चत्तरम या धर्मशाला हैं, यक्के और बैलगाड़ियां स्टेशन पर किराये पर मिलती हैं ॥

कोयेम्बाटोर मद्रास से २०६ मील है और तीसरे दरजे का किराया डाकगाड़ी में ४) और सवारी गाड़ी में ३≈) है ॥

---

## कौंजीवर्म ।

या कांचीपुरम मद्रास से ४६ मील है यह चोला खानदानका मशहूर शहर था और चौधवीं सदी में तोंदामन्दालम का राजधानी था सन् १६४४ ई० में बिजयानगर के ज़वाल पर यह गोलकण्डा के मुसलमान बादशाहों के हाथ आया और बाद में अरकाट रियासत का हिस्सा बन गया। सन् १७५१ ईसवी में अरकाट से वापिस आकर क्लाइव ने फ्रांस वालों से इस को फतह किया ॥

कौंजीवर्म हिन्दुस्तान के सात बड़े तीर्थों में से है । जिन की यात्रा करने से कहते हैं मरने के बाद सुख मिलता है सातवीं सदी में बुद्ध लोगों का यहां बहुत ज़ोर था लेकिन उसकी अगली सदी में जैन आये और जैन वैरागने ज़िलें में अबतक मौजूद हैं । बारहवीं सदी के करीब यह जगह हिन्दुओं के हाथ आई । दो मन्दिर जो जनूबी हिन्दुस्तान में सब से बड़े हैं सन् १५०६ ई० के करीब कृष्णराय ने बनवाये थे॥

कौंजीवर्म के छोटे बड़े दोनों कसबों में मन्दिरों के झुण्ड हैं और चोलतरियां याने धर्मशालें भी हैं । यात्री यहां कसरत से आते रहते हैं ॥

बड़े कौंजीवर्म में शिवजी के मन्दिर में खूबसूरत गउरे और बड़े २ मंडप, याने मामूली १०० पीलपाओं वाले दालान और कई खूबसूरत तालाब हैं जिन के इर्द गिर्द पत्थर की सीढ़ियां बनी हुई

हैं सब से बड़े गपूरे की दस मंज़िलें हैं और ऊंचाई १८८ फीट है चोटी पर से मन्दिर और आस पास का बड़ा अच्छा नज़ारा दिखाई देता है ॥

छोटे कौंजीवर्म में विष्णु का मन्दिर बड़े मन्दिर से क़रीब दो मील के फासले पर है। इस में एक बड़ा अजीब ६६ पीलपाओं का दालान है जिन पर जड़ के क़रीब सवारों और पशुओं की मूर्ति बनी हैं। तालाब के सामने दो मुनारें झण्डों के वास्ते हैं और एक रंगीन छत की बारादरी है जिस के चार पीलपाये है। इस मन्दिर के खज़ाने में बहुत से पुराने ज़माने के बड़े कीमती जवाहरात हैं ॥

कौंजीवर्म के बड़े भारी मेले पर जो मई के महीने में होता है अनगिनत यात्री दूर दूर से आते हैं। कौंजीवर्म साऊथ इण्डियन रेलवे पर मदरास बीच स्टेशन से ४६ मील है। तीसरे दरजे का किराया ॥=) लगता है ॥

---

## कोटअदू ।

नार्थ वेस्टर्न रेलवे की लालामूसा शेरशाह शाख़ पर एक स्टेशन है लाहौर से ३८३ मील के फासले पर है और तीसरे दरजे का किराया ४।=)।। लगता है ॥

यहां सितम्बर महीने के पहिले हफते में कांसीगर का मेला लगता है जिस में डेरा इ माईलखां, डेरा गाज़ीखां और मुलतान से ५००० के क़रीब लोग आते हैं। यह मेला तीन दिन तक रहता है ॥

---

## कोट्टापल्ली ।

अहाता मदरास, ज़िला गोदावरी, तालुक रामचन्द्रपुर में

गांव है। इस को हिन्दू लोग बहुत पवित्र मानते हैं और बारहवें साल हज़ारों यात्री आते हैं। पगोड़े के पास दरिया का पानी बहुत ही पवित्र समझा जाता है॥

अन्नावर्म में जो यहां से डेढ़ मील है मई के महीने में श्री वीरा वग्किाटासलिया नारायन स्वामी का बाड़ भारी मेला होता है जिस में ५ हज़ार के क़रीब लोग आते हैं॥

कोटापल्ली में देशियों और अंग्रेज़ लोगों के लिये टिकने की कोई जगह नहीं पर अन्नावर्म में एक चत्तरम और एक बंगला है॥

. कोटापल्ली मद्रास रेलवे पर मद्रास से ४१५ मील है तीसरे दरजे का किराया ५।७) है॥

## .कोट्टमट्टी।

साऊथ इण्डियन रेलवे पर मद्रास बीच जंकशन से ३१५ मील के फासले पर वाक़े है मद्रास बीच से तीसरे दरजे का किराया ३॥) लगता है। यहां सोमवार के दिन एक मेला होता है॥

कावेरी दरिया के किनारे पर एक पुराना और खूबसूरत शिवजी का मन्दिर है जहां चैत्र के महीने में रथयात्रा का मेला होता है॥

स्टेशन के पास एक डाक बंगला और देशी लोगों के लिये एक चत्तरम है॥

## कोटापाकोंडू।

मद्रास अहाते के किस्टना जिले और नरसाराओपेट तालुक में एक पहाड़ी गांव और बड़ा मशहूर मन्दिर है, पहाड़ी नरसाराओ पेट के दक्खिन की तरफ ८ मील है और उस पर शिवजी का मन्दिर है जो मैदान से ६०० फीट ऊंचा है मन्दिर तक सीढ़ियां बनी हैं॥

फर्वरी के महीने में नये चन्द्रमा को यहां बड़ा भारी मेला होता है जिस में कई हजार लोग आते हैं। मेले के मौके पर लकड़ी का बड़ा व्योपार होता है॥

पहाड़ी के ऊपर एक धर्मशाला है जिस में उसका मालिक मेले के दिनों में ब्राह्मणों को भोजन दिया करता है और लोग मैदान में ठहरते हैं॥

नरसाराओपेट बंगलोर से सर्दन मरहट्टा रेलवे में ४०५ मील है और तीसरे दर्जे का किराया सवारी गाड़ी में ४)॥ लगता है॥

## कोट फतेहखां।

नार्थ वैस्टर्न रेलवे ( पंजाब लैन ) की रावलपिंडी खुशालगढ़ थल शाख के स्टेशन गगन के पास वाक़े है जो रावलपिंडी से ३८ मील है और तीसरे दर्जे का किराया ।≈)। लगता है॥

अपरैल में बैसाखी के मौक़े पर यहां बड़ाभारी मेला होता है जिस में रावलपिंडी, पिंडीघेप, फतेहजंग और पेशावर और मजेहल जिलों से ४ या ५ हज़ार के करीब लोग जमा होते हैं। यह मेला दो दिन तक रहता है॥

## कोनारक।

यह तीर्थ की जगह पुरी से १६ मील उत्तर और पूर्व के कोने में समुद्र के क़िनारे पर वाक़े है। इस मन्दिर की बाबत कहते हैं कि बुद्धिमान नारद को एक जवान आदमी पर जिसका नाम सम्बा था शक हुआ कि कृष्णजी की १६ हज़ार स्त्रियों से आशनाई रक्खता है। उस ने उस आदमी को शराप दिया और वह कोढ़ी होगया। पर रोज सूरज की ओर ! सूर्य्य कह कर पूजा करने से उस का रोग जाता रहा। दूसरे दिन जब वह दरिया में स्नान कर रहा

था तो उस को एक मूर्ति मिली जो विश्वकर्मा ने दरिया में डाल दी थी। यह मूर्ति सूर्य के अङ्ग के एक हिस्से की बनी हुई थी सम्बा ने इसके वास्ते एक मन्दिर बना दिया जिसमें सूर्य को रोग दूरकरने द्वारा मान कर उस की पूजा होती है सारे मन्दिर में भांत भांत की संगतराशी का काम किया हुआ है। कोनारक को पुरी से पालकियां और बैलगाड़ियां जाती हैं॥

यहां धर्मशाला कोई नहीं पर एक दफा जब मन्दिर की मरम्मत होरही थी गवर्नमेण्ट ने कुछ झोपड़ियां बनाई थीं जिन में अब यात्री लोग ठहरते हैं॥

पुरी बङ्गाल नागपुर रेलवे में कलकत्ते से ३११ मील है और तीसरे दरजे का किराया सवारी गाड़ी में ४=) है॥

## कोरेकी।

पंजाब के जिला सियालकोट तहसील पसरूर में सियालकोट से २७ मील है। सियालकोट लाहौर से ८६ मील है तीसरे दर्जे का किराया १)॥ लगता है॥

सितम्बर के तीसरे हफ्ते में यहां गुल्लूशाह की माल मंडी का मेला होता है जो एक हफ्ता रहता है इस मेले में ८० हजार के करीब लोग सूबा पंजाब के सब हिस्सों से आते हैं॥

## कर्णवास।

यह तीर्थ सूबा आगरा और अवध के जिला बुलन्द शहर में अनूपशहर से ८ मील के फासले पर है। यहां एक शीतलामाई का बड़ा पुराना मन्दिर है। मालूम नहीं इस मन्दिर को किसने और कब बनाया था। जून में दशहरे के मौके पर यहां एक बड़ाभारी मेला

होता है जो तीन दिन रहता है। इस में हजारों आदमी गंगा जी में स्नान करने को आते हैं। हर सोमवार को औरतें पूजा के लिये आती हैं। बुलन्दशहर से कर्णवास को बैलगाड़ी मिलती हैं कर्णवास में कई धर्मशाला हैं॥

बुलन्दशहर ईस्ट इण्डियन रेलवे का स्टेशन कलकत्ते से ८६६ मील है तीसरे दरजे का किराया ७॥=) लगता है॥

---

## कोरनाली।

सूबा पंजाब के जिला रावलपिंडी, गुज्जारखां तहसील में एक छोटा गांव है जो नार्थ वेस्टरन रेलवे के गुज्जारखां स्टेशन से ६ मील के फासले पर वाक़े है सवारी के लिये स्टेशन पर खच्चरें टट्टू और ऊंट मिलते हैं॥

इस गांव में एक महात्मा का मन्दिर है जो उन के नाम पर गुफा बाबा मोहनदास कहलाता है इर्द गिर्द के गांवों के लोग उस को बहुत मानते हैं। बैशाखी के मौके पर यहां बड़ाभारी मेला होता है जो तीन दिन रहता है इस मेले पर ३ से ४ हजार तक लोग जमा होते हैं मन्दिर में ग्रन्थ साहब रक्खा हुआ है॥

गांव में एक सरॉय और एक धर्मशाला है॥

गुज्जारखां रावलपिंडी, से ३३ मील है और तीसरे दरजे का किराया ।=)। है॥

---

## कोह्लापुर।

यह शहर कोह्लापुर रियासत की राजधानी है और मुद्दत से महालक्ष्मी देवी के बड़े पुराने मन्दिर के सबब बहुत मशहूर है कटिया जो पहले इस के गिर्द बनीहुई थी अब मट्टी के नीचे कई फीट दबी हुई है मालूम होती है कि यहां कभी धरता को बहुत

हिलजुल हुई थी। १८८० में एक बड़े स्टूपा में से एक बिल्लौर का सन्दूकचा निकला जिस के ढकने के ऊपर अंग्रेजी सम्वत से पहिले तीसरी सदी का असोका अक्षरों में एक कतबा था। अब भी धरती खोदने से छोटे २ मन्दिर निकल आते हैं॥

मिट्टी के बरतन, लोहे की चीज़ें, मोटी रुई और ऊन का कपड़ा चिकना कागज़, इतर, शराब, शीशे और गोटे के जेवर बनते हैं॥

यहां एक प्राविन्शल कालिज भी है॥

इस नगर में कई धर्मशाला हैं और एक धर्मशाला शाहपुर में स्टेशन के पास है। स्टेशन के सामने एक होटल और पौन मील के फासले पर डाक बंगाला है। सवारी हरवक्त मिलती है॥

कोल्हापुर सदरन मरहट्टा रेलवे में पूना से १८६ मील है तीसरे दरजे का किराया १॥।≥)॥ लगता है॥

---

## कोलाघाट।

बंगाल नागपुर रेलवे पर हौडे से ३४ मील एक स्टेशन है तीसरे दरजे का किराया हौडे से ।≥)। लगता है। यहां से १० मील दखिन की तर्फ सी० ऐस० ऐन० कम्पनी के घाट के पास तमलूक या नमरालिपति वाक़े हैं जिसका सब से पहिले जिकर चीन देश के मशहूर यात्री हियून संग के लिखे हुए हाल से पायाजाता है यह मशहूर यात्री बुद्ध लोगों की इस पुरानी बस्ती में सम्वत् ई० की सातवीं सदी में आया था उस जमाने में तमलुक बड़ाभारी बन्दर था और बुद्धलोगों ने जो पांचवीं सदी के शुरू में यहां आकर बसे १० अस्थल बनाये जिन में एक हजार महन्त रहते थे। अशोका के एक २०० फीट ऊंचे मिनारे से भी मालूम होता था कि बुद्ध लोगों

की यहां बड़ी बस्ती थी। तमलुक के सबब से पहिले अज्ञ चक्करधारी बंश के क्षत्री होते थे ॥

तमलुक के सबब से मशहूर मन्दिर बर्गभीमा और कृष्ण अर्जुन के हैं इन में से पहला ऊंची जगह पर बना हुआ है और शकल और बनावट की तर्ज़ में अनोखा है। दूसरा राजा तमोरधजा ने बनाया था, इस में कृष्णजी और अरजून की मूर्तियां हैं कहते हैं कि जब महाराजा युधिष्ठिर ने अश्वमेध यज्ञ करने के लिये घोड़े को कृष्ण जी की रक्षा में छोड़ा तो घोड़ा तमलुक चला आया जो उस वक़्त जबरदस्त राजा तमोरधजा की राजधानी थी। राजा के लड़कों ने घोड़े को पकड़ लिया और इस पर उन लड़कों और अर्जुन में लड़ाई हुई अर्जुन की हार हुई उसने यह हाल कृष्णजी को सुनाया कृष्णजी ने कहा कि जिस राजा के लड़कों से तू लड़ा उस पर विष्णु जी की कृपा है किसी छल से काम लेना चाहिये तब अर्जुन और कृष्ण जी ब्राह्मण का भेष करके राजा के महल में गए पर वहां राजा की भक्ती के बहुत से निशान देख कर ऐसे आदमी को धोखा देने से लेजाए और राजा के सामने हो गए राजा ऐसा खुश हुआ कि उस ने जोश में आकर विन्ती की कि वह कृष्णजी जगत् के सर्दार और अर्जून को रोज़ देख सका करे उस की विन्ती मनजूर हो गई तो उस ने कृष्णजी और अर्जुन की पत्थर की मूर्तियां बनवाई और एक खास मन्दिर बनवाकर उस में रख दीं ॥

---

## कोवूर ।

यह मदरास रेलवे का स्टेशन मदरास से ३५६ मील है और तीसरे दरजे का किराया ४।।=) है यहां तहसील है और इसी जगह से गोदावरी दरिया का पुल बनना शुरू हुआ था। हिन्दुओं के नज़दीक

यह जगह पवित्र मानी जाती है क्योंकि कहते हैं कि यहां गोदावरी को गौतम लाया था ॥

यहां छोटी जाति के लोगों के लिये एक छोटी सी धर्मशाला है और लोग टिकने के लिये आप बन्दोबस्त करते हैं ॥

---

## किशोरगंज ।

बङ्गाल के ज़िला मैमनसिंह में एक नगर और म्यूनिसिपैलटी है और किशोरगंज सबडिवीज़न का हेडक्वाटर है यह नगर कुडाली खल पर ब्रह्मपुत्र से १३ मील के फासले पर वाक़े है भूलन यात्रा के दिनों में कृष्ण जी का मेला होता है जो आधी जूलाई से आधे अगस्त तक रहता है यहां एक किस्म का बारीक़ कपड़ा बनता है ॥

यहां सराय या धर्मशाला नहीं मेले के दिनों में यात्रियों के लिये झोपड़ियां डाल दी जाती हैं ॥

खुश्क दिनों में गफरगाऊं स्टेशन पर गाड़ियां और पालकियां मिलती हैं गाड़ी का किराया ७) और पालकी का २) होता है, पर वर्षा के दिनों में ७ मील किश्ती में जाना पड़ता है किश्ती का किराया १।) लगता है ॥

गफरगाऊं ईस्टरन बङ्गल रेलवे जो ढाका शाख पर स्टेशन है यह कलकत्ते से ३१७ मील है तीसरे दरजे का किराया ४~) लगता है ॥

---

## कटास ।

सूबा पंजाब ज़िला जेहलम तहसील पिंड दादनखां में एक पवित्र चश्मा है। ज्वालामुखी और कुरुक्षेत्र के सिवा सब के सब तीर्थों से यहां यात्री ज़ियादा जाते हैं ॥

इसकी असल यों बताते हैं, कि शिव जी की अपनी स्त्री सती दक्ष की पुत्री के काल होजाने का ऐसा रंजहुआ कि उन की आंखों से आंसू जारी होगये जिस से दो पवित्र ताल एक अजमेर के पास जिस को पुष्कर कहते हैं और दूसरा कटाक्ष या कटास सिन्ध सागर दोआबे में बन गये। कटास नमक के पहाड़ों की दूसरीतर्फ १६ मील पिंडदादनखां से और १८ मील चकवाल से वाके है गिर्द की पहाड़ियों पर दीवालों बुर्जों ईंटों के खंडर हैं और उन के नीचे एक अहाते के अन्दर सात धारा याने सात मन्दिरों के खंडर हैं कहते हैं यह मन्दिर पांडव भाइयों ने बनवायेथे जो अपने १२ वर्ष के बनबास का एक हिस्सा कटास में आकर रहे थे। गर्मी के शुरू में यहां एक बड़ाभारी मेला होता है जिस में ८० हजार के करीब यात्री आते हैं॥

खेवडा स्टेशनपर टट्टू और खच्चरें बंदोबस्त करने से सवारी के लिये मिल सक्ती है पिंडदादनखां में यके और टमटमें बहुत मिलती हैं॥

कटास में यात्रियों के टिकने के लिये कई मकान बने हैं॥

खेवडा नार्थवैस्टर्न रेलवे पर स्टेशन है और लाहौर से १४२ मील है। तीसरे दर्जे का किराया १॥=)॥ लगता है॥

---

## कटकराज।

नार्थ वैस्टर्न रेलवे के खेवडा स्टेशन से १२ मील है यहां एक मन्दिर है, जिस में देवी की मूर्ति रक्खी है। चैत महीने की पहली तारीख यहां एक बड़ा मेला होता है जिस में हजारों यात्री जमा होते हैं। खेवडा लाहौर से १४२ मील है तीसरे दर्जे का किराया १॥=)॥ लगता है॥

## कटनी ।

ई० आई० जी० आई० पी० और बी० एन० रेलवे यहां मिलती है यह जगह बी० यन० रेल के ज़रीये कलकत्ते से ६४३ मील है और तीसरे दर्जे का किराया ५।॥) है और ई० आई० आर रेलवे में ६७६ मील और तीसरे दर्जे का किराया ६।-)। है बंम्बई से कटनी ६७३ मील है और तीसरे दर्जे का किराया सवारी गाड़ी में ७॥) है मुलक का वह हिस्सा जिस में से जी० आई० पी० रेल गुजरती है तारीख में बहुत मशहूर है रस्ते में सागर, भोपाल, ग्वालियर, उदैपुर और झांसी बड़े बड़े शहर आते हैं। बङ्गाल नागपुर रेलवे पर यह रास्ता थोड़े दिनों में कलकत्ते से किरायों को सब रस्तों से नजदीक हो जायगा ॥

कटनी में अनाज जमा होकर बाहर जाता है और चूना बहुत होता है यहां एक रंग भी तैयार होकर बाहर जाता है ॥

स्टेशन के ऊपर पहले और दूसरे दर्जे के मुसाफिरों के वास्ते एक छोटासा वेटिंगरूम है और शहर में देसी मुसाफिरों के लिये एक बड़ी सराय है ॥

कटनी अनाज की बड़ी मण्डी है ॥

---

## कटपदी ।

मद्रास रेलवेपर एक स्टेशन और नगर है मद्रास से ८१ और अजीकल से ३६३ मील है तीसरे दर्जे का किराया इन दोनों जगह से ॥।॥) और ४।-) है कटपदी साऊथ इण्डियन रेलवे का जंकशन भी है। यहां से ५७ मील साऊथ इण्डियन रेलवे पर तिरुवन्नामलई वाके है जो एक बड़े मन्दिर के सबब मशहूर है मद्रास रेलवे के स्टेशनों पर से धुर तिरुवन्नामलई तक टिकट मिल सके हैं। कटपदी

से २ मील के फासले पर पालार दर्या पर आधा मील लम्बा पक्का पुल बना हुआ है। स्टेशन के पास हर शनिश्चर के दिन शांडी याने मेला होता है॥

कटपदी से ४ मील दक्षिण की तरफ वेलोर जगह है जो बड़ा भारी देसी नगर और व्योपार की जगह है यहां पहले मदरासी देसी पलटन का एक दस्ता रहता था पर जिले के अफ़सर बितूर में रहते हैं। बेलोर में एक पुराना क़िला है जिस के अन्दर एक मन्दिर है इस मन्दिर में बड़ी अजीब संगतरासी की हुई है इस की थोड़े दिन हुए सर्कार ने मरम्मत की थी॥

सेन्टरल जेल किसम किसम का कपड़ा बनाने के वास्ते मशहूर है

कटपदी में दो धर्मशाला हैं और तिरुवनमलई में कई हैं यक्के और बैलगाड़ियां दोनों जगह मिलतें हैं कटपदी में अनाज का व्योपार होता है॥

---

## कठोर गिरी।

अहाता मदरास में अरोनाचल और त्रिचनापली के बीच में एक पर्वत है इस पर एक बड़ा मशहूर मन्दिर है जिस के दर्शन करने को हिन्दुस्तान के सब हिस्सों से यात्री आते हैं॥

---

## कादिरी।

मदरास अहाते के कड्डापा जिले में नगर है और कादिरी तालुकका सदर है यहां एक गपोड़ा है। नरसिंह स्वामी का यहां फर्वरी के आखीर में मेला शुरू होता है जब हजारों यात्री आते हैं नगर के बाहर मुसलमानों की बहुत कबरें और मसजिदें हैं। जिन

से मालूम होता है कि यह नगर मुसलमानों के पास भी रहा है।

यहां एक बड़ा चत्तरम और एक बंगला भी है। कादरी में गेहूं, चने, कम्बू, चोलम, अरिंड का बीज, इमली और चमड़ा साफ करने की छाल पैदा होती है॥

कादिरी साऊथ इण्डियन रेलवे का स्टेशन है, मदरास बीच स्टेशन ३३६ मील के फासले पर वाक़े है तीसरे दरजे का किराया ३॥) लगता है॥

---

## कडापा।

जिला कडापा का हैडक्वार्टर और मदरास रेलवे का स्टेशन है मदरास से १६२ मील और तीसरे दरजेका किराया १॥≈)है, यह देसी लोगों की बड़ी ब्योपार की जगह है। शहर के अन्दर चार मकान हैं जो पहले कडापा के नवाब के महल थे, पर अब उन में सर्कारी दफ़्तर हैं इन में बाज़ी बाज़ी जगह बेल बूटे का अच्छा काम किया हुआ है जिले में बहुत पुरानी इमारतें देखने के लायक़ हैं खासकर मदनापल्ल में जहां एक पगोड़ा और एक खूबसूरत संगतराशी किया हुआ मीनार है इस नगर की आबादी १६४३७ है॥

स्टेशनसे एक फरलांग के फासले पर एक चत्तरम है और नगर में जो स्टेशन से ढाई मील है २ चत्तरम एक धर्मशाला और एक बंगला है। स्टेशन पर यके हर वक़ मिलते हैं॥

---

## कुत्तलम।

अहाता मदरास के जिला तिन्नीवेली और तेनकासी तालुक़ में एक गांव है, यहां की आबहवा बहुत अच्छी है। जिले के लोग जून से अक्तूबर तक यहां आकर रहते हैं॥

इस जगह छोटी से छोटी पानी की चादर १०० फुट ऊंची है, उस के नीचे खूबसूरत नहाने की जगह और एक गपोड़ा बनाहुआ है। कुत्तलम के इर्द गिर्द बहुत से मन्दिर हैं जहां यात्री लोग बहुत आते रहते हैं

देसी औरतों के लिये यहां कपड़ा बनता है। धान और नारियल यहां से बाहर जाते हैं, गांव में देसी लोगों के ठहरने के लिये दो मकान और तीन होटल हैं॥

कुत्तलम मदरास बीच स्टेशन से १८२ मील है तीसरे दरजे का किराया २~) लगता है॥

---

## कनखल ।

हरिद्वार से डेढ़ मील दखिन की तर्फ गंगा जी के किनारे पर वाके है। कलकत्ते से ई० आई० आर रेलवे पर हरिद्वार तक फासला ६२१ मील और तीसरे दरजे का किराया ८॥।=) है और दिल्ली से १६१ मील और तीसरे दरजे का किराया २)। है। इस जगहपर गंगा जी की तीन धारें होकर मिली हैं संगम पर पानी की चौड़ाई २००० हाथ है। इस तीर्थ की यात्रा करने से कुल पाप नाश होजाते हैं और हमेशा के लिये स्वर्ग प्राप्त होजाता है इसी जगह राजा दत्त ने यज्ञ किया था और इसी जगह सती ने अपने पती की निन्द्या सुनकर आत्मघात कर लिया था। दक्षिण की तरफ शिव जी की मूर्ति है जिस को दत्तेश्वर कहते हैं यहां सीताकुण्ड तीर्थ भी है पहाड़ के ऊपर एक चबूतरा बना हुआ है जिस में त्रिसूल गड़ा हुआ है॥

यहां यात्रियों के आराम के वास्ते कई धर्मशाला हैं पर यात्री उसी दिन हरिद्वार को लौट आते है॥

## कण्टईरोड ।

बंगाल नागपुर रेलवे पर कण्टई के लिये स्टेशन है। हौडे से ६४ मील और तीसरे दरजे का किराया १≶)॥ लगता है ॥

कसबा कण्टई बंगाल जिला मिदनापुर में कण्टई सबडिवीजन का सदर मुकाम है ॥ इस से १० मील खुश्की की तरफ पश्चिम को कसबा कसयारी है यहां पुराने जमाने के देखने के लायक खण्डर अब तक मौजूद हैं । कुरम्बरा के किले या स्थल की १० फीट ऊंची दीवारें लाल पत्थर की बनी हुई अबतक अच्छी हालत में हैं इस स्थल के अन्दर एक कतार कुटियों की है इस में से हर एक कुटिया आठ फीट चौडी है। किले के अन्दर मन्दिर हैं जिस में एक कूयें की तह में महादेवजी की मूर्ति है जिस को अब भी बहुत लोग पूजते हैं। किले में पश्चिमी किनारे को एक मसजिद भी है जो अब इस्तेमाल नहीं कीजाती। इस को अन्दर की पश्चिमी दीवार पर उड़िया जबान में एक कतबा है जिससे मालूम होता है कि इसे महम्मद ताहिर ने औरंगजेब के जमाने में बनाया था लेकिन थोडी देर बाद किला फिर हिन्दुओं के हाथ आगया और मसजिद बेकार होगई। उत्तर की तरफ एक बड़ा और गहरा तालाब है जिस को जगेश्वर कुण्ड कहते हैं। इस तालाब में मगरमच्छ रहते हैं। यहां के लोग कहते हैं कि इस स्थल को कविलेश्पर के महाराज ने बनाया था यह राजा उड़िया के देवराज वंश में से था। इसी जगह मशहूर बाघ राजा रहा करता था। जब यह जगह बिलकुल जंगल थी उसकी गायें भैंसे दरिया सुवरनरेखा जो उस वक्त यहां बहता था कि पश्चिमी किनारे पर खेतों में चरा करती थीं एक दिन एक गाय ने और दिन से थोड़ा दूध दिया और राजा ने ग्वाला को जो गायें, भैंसों को चराया करता था सज़ा दी। इस के बाद ग्वाला छुप के गायें के पीछे

रहा। गाये दरिया पार जाकर पूर्व्व की तरफ चली और एक महादेव जी की मूर्ति के पास जाकर अपना दूध देवता के सिर पर डाला, बाघ राजा ने सुनकर यह हाल महाराजा कपिलेश्वर से कहा जिसने मन्दिर बनवा कर देवता के नाम कर दिया ॥

शायद इस इलाक़े में कयारचन्द के पत्थर के पीलपाओं के खण्डर सब से अजीब हैं, यह खण्डर गिनती में हज़ार के क़रीब हैं और एक बड़े मैदान पर फैले हुए हैं कहते हैं कि यह एक हिन्दू राजा जवाहरसिंह की तजवीज़ से बनाए गये थे, ताकि दुशमन इतने आदमियों को रात दिन पहरे पर देख कर डरें, उडिया रियासत में एक मन्दिर है जिस में संगमरमर की तख़्ती पर एक कुतबा है। जिस से मालूम होता है कि इसको राजा चोहनसिंह ने बनवाया था ॥

यहां एक मुग़लपाड़ा भी है जहां मुग़लों के ज़माने की इमारतें हैं इनमें से बहुत औरंगज़ेब के ज़माने की हैं यह जगह टस्सर और रेश्म के काम के लिये मशहूर है ॥

स्टेशन से नगर ३५ मील है, ऊंट और बैल गाड़ियां स्टेशन पर किराये को मिल सकती हैं ॥

स्टेशन पर और नगर में कोई सराये या धर्मशाला नहीं पर ४ डाक बंगले हैं जिन में से एक स्टेशन के पास है और बाक़ी नगर को जाते हुए रस्ते में आते हैं ॥

---

## कन्नौज ।

सूबा आगरा और अवध के ज़िला फ़रुख़ाबाद में एक बड़ा पुराना नगर है, काली नदी के पश्चिमी किनारे पर गंगा जी के संगम से ५ मील ऊपर की तरफ़ वाक़े है, यह पवित्र दरिया पहिले

शहर के पास ही बहता था पर अब ४ मील उत्तर की तरफ़ हट गया है। पहले यह एक बड़े ज़बरदस्त हिन्दू राज्य की राजधनी थी, और इस जगह बहुत से मारके हो गुज़रे हैं, पुरानी इमारतों के खंडर आधे घेरे में पांच मील तक पांच गांओं में फैले हुए हैं, राजा जैपाला की समाध बहुत अजीब है इससे दूसरे दरजे पर जुमां मसजिद है। सिक्के और २ पुरानी चीज़ें अब तक बहुत निकलती हैं। यह नगर पहले हिन्दू शायस्तिगी का मरकज़ था ॥

कन्नौज देसी इतरों के वास्ते मशहूर है ॥

क़न्नौज बी० बी० ऐंड सी० आई० रेलवे का स्टेशन है और कानपुर से ४६ मील है और तीसरे दरजे का किराया ॥)। है ॥ शहर में सराय है ॥

---

## कन्या आश्रम।

हारिद्वार से पश्चिम की तरफ़ ३० मील के फ़ासले पर है। शकुन्तला की पैदायश की जगह है इस वास्ते बड़ी मशहूर है। यहां की आब हवा बहुत अच्छी है ॥

हरिद्वार में सवारी किराये पर मिलती है ॥

हरिद्वार सहारनपुर से ४६ मील है तीसरे दरजे का किराया ॥≈)। लगता है ॥

---

## कपाद्वंज।

बी० बी० ऐंड सी आई० रेलवे के स्टेशन दकोर से २० मील उत्तर की तरफ़ एक क़सबा है जिस के गिरद पक्की दीवार बनी हुई है यह बड़े व्योपार की जगह है यहां साबन, शीशे और घी के वास्ते कुप्पे बन्ते हैं। शहर के अन्दर एक खूबसूरत हौज़

बनाहुआ है और पूर्वी दरवाजे के पास एक आरामगाह है। यहां मुसलमानों की मसजिदों और कबरों के खण्डर भी हैं और जैनियों का एक मन्दिर है जो २५ लाख रुपये १५०००० रुपये की लागत से बना था इस में संगमरमर के खूबसूरत पीलपाये हैं और फरश भी संगमरमर का है, जिस में पच्चरकारी की हुई है॥

दकोर और कपाद्वंज के बीच में लसुन्दरी के गर्म पानीके चश्मे हैं जिनकी जियादा से जियादा हरारत ११५ दरजे है पानी में किसी कदर गन्धक की मिलावट मालूम होती है और कहते हैं कि यहपानी शरीर की खलड़ी के रोगों को फायदा करता है॥

दकोर से कपाद्वंज को तांगे जाते हैं और कपाद्वंज में मुसा-फिरो के वास्ते कई धर्मशाला हैं॥

दकोर भी बड़ी तीर्थ की जगह है दूर २ से लोग यात्रा के लिये आते हैं यहां भी बहुत सी धर्मशाला हैं॥

दकोर बम्बई (कुलाबा) से २८६ मील है तीसरे दरजे का किराया ३७)॥ लगता है॥

## कपालमोचन।

यह तीर्थ अम्बाले के पूर्व की तरफ नार्थ वस्टर्न रेलवे के जगाधरी स्टेशन से ६ मील के फासले पर वाके है यहां कई पके ताल और मन्दिर हैं और कार्तिक के महीने में इस जगह एक ऋषि की यादगार में जिन्होंने कई आश्चर्य काम किये थे एक बड़ा भारी मेला होता है जिस में दूर दूर से हजारों यात्री आते हैं इस जगह स्नान करने से बड़ा पुण्य होता है। यात्री लोग झोपड़ियों में ठहरते हैं और बाजे अपने खेमे ले आते हैं कई एक मकान भी हैं पर इन को धनी लोग ले लेते हैं। कपालमोचन जाने के लिये जगाधरी में यक्के और बैलगाड़ियां मिलती हैं॥

जगाधरी दिल्ली से १३० मील है और तीसरे दरजे का किराया १॥)॥ है। अम्बाले से ३२ मील और तीसरे दरजे का किराया।=) है

## कपिला मुनी।.

बंगाल अहाते के खुलना जिले में एक गांव है। कबदक दरिया के किनारे पर ताला से ५ या ६ मील नीचे वाक़े है। इस गांव का नाम एक महात्मा के नाम से कपिला मनी मशहूर होगया है। यह महात्मा बड़ा कपिला नहीं थे जिन्हों ने राजा सागर के लड़कों को भस्म कर दिया था केवल एक तपस्वी थे। पुराने जमाने में इन महात्मा ने यहां अपना स्थान बनाकर कपलेश्वरी की मूर्ति रक्खी थी जिसकी आज तक पूजा होती है। इस देवी का मार्च के महीने में बारुनी स्नान के दिन बड़ा भारी मेला होता है॥

कहते हैं कि इस जगह पर उस दिन के वास्ते कबदक दरिया के पानी में कपिला मुनीजी के गुनों के सबबसे पवित्र करने की गंगा जी जैसे गुण होजाते हैं॥

इस गांव में पहुंचने के वास्ते ई० बी० ऐस रेलवे के सन्टरल सेक्शन के झिकारगाछा स्टेशन जाना चाहिये और वहां से अगनबोट में कपिलमुनी पहुंचते हैं। झिकारगाछा कलकत्ते से ६७ मील है और तीसरे दरजे का किराया ॥।=) है॥

होरमिल्लर कम्पनी के जहाज में झिकारगाछा स्टेशन से कपिल मुनी तक १) किराया लगता है॥

## कपोलास।

उड़िसा की रियासत धेकानल में एक पहाड़ी है जो समुद्र से

२०१८ फीट ऊंची है। उस पहाड़ी का नाम कपिलास एक मन्दिर के सबब से होगया है जो इस की चोटी के पास वाके है फरवरी के महीने में यहां बड़ाभारी मेला होता है जिस में हजारों यात्री आते हैं। इस मौके पर बड़ा ब्योपार होता है॥

इस जगह जाने के लिये बङ्गाल नागपुर रेल पर कलकत्ते से कपीलास रोड़ स्टेशन जाना चाहिये। कपीलास रोड कलकत्ते से२४४ मील है तीसरे दरजे का किराया३≈)लगता है। कपिलास रोड़स्टेशन पर गाड़ियां और पालकियां पहाड़ी को जाने के लिये मिलती हैं॥

## कपूरथला।

सूबा पञ्जाब की रियासत कपूरथला की राजधानी और बड़ा नगर है नार्थवेस्टर्न रेलवे के स्टेशन जालन्धर शहर से ११ मील है और कर्तारपुर से ७॥ मील। जालन्धर और कर्तारपुर से कपूरथले तक पक्की सड़क गई है और यक्के सवारी के लिये मिलते हैं यक्के का किराया जालन्धर से ≈) आने से ।) या ।−) आने तक एक सवारी के लगते हैं। कपूरथले में महाराजा साहिब के कईसुन्दर बाग़ महिल और कोठियां हैं। इस नगर में फरवरी के महीने में चांकी का मेला लगता है जिस में हजारों लोग आते हैं॥

यक्के थाने के पास सराय है और नगर के अन्दर धर्मशालायें हैं॥

जालन्धर लाहौर से ८१ मील है और तीसरे दरजे का किराया ॥॥≈)। लगता है॥

## कमलापुरम।

मदरास रेलवे की नार्थईस्ट लैन पर स्टेशन और मदरास

-७१ से १७६ मील के फासले पर है। मुसाफिर गाड़ी में तीसरे दरजे का किराया १॥/) और डाकगाड़ीमें २।-) लगता है। इस जगह दूसरे दरजे के मजिस्टरेट की कचहरी है। यहां से ५ मील उत्तर पूर्व की तरफ पुष्पागिरी में एक बड़ा मशहूर मन्दिर है॥

## कम्पिल।

सूबा आगरा और अवध जिला फ़रुखाबाद, तहसील कायम गंज में गंगाजीके किनारे फ़तेहगढ़ नगर से २८ मील उत्तर पश्चिम की तरफ गांव है। महाभारत में लिखा है कि यह गांव दक्खिनी पंचाला में राजा द्रौपदा की राजधानी था इस राजा की पुत्री द्रौपदी की पांच भाई पाण्डव से विवाह हुआ था। कहते हैं कि पुराना नगर कम्पिला ऋषि एक बनबासी ने बसाया था और द्रौपद राजा से पहले यहां ब्रह्मदत्त राज करता था। साल में दो मेले एक अक्तूबर नवम्बर में और दूसरा मार्च अपरैल में इस जगह होते हैं॥

इस नगर में थाना, डाकखाना और मदरसा भी है॥

कम्पिल में ठहरने की जगह कोई नहीं पर जैनी लोग मन्दिरके पास के घरों में ठहरते हैं जैनी अब एक धर्मशाला भी बनारहे हैं॥

कायमगंज में स्टेशन से ३ फलांग के फासले पर बंगला है और नगर में एक सराय है और स्टेशन से दो मील के फासले पर एक धर्म्मशाला भी बन रही है। कायमगंज में चाकू, सरौते और ताले बनते हैं और यहां से संगतरे, तमाकू, आलू, शकरकन्दी, चाकू और ताले बाहर जाते हैं। कम्पिल से भी तमाकू बाहर जाती है॥

कायमगंज में कम्पिल जाने के लिये यक्के और बहालियां किराये पर मिलती हैं यक्के का मामूली किराया १) और बहली का ॥।) होता है पर मेल के दिनों में किराया बहुत बढ़जाता है॥

कायमगंज बी० बी० सी० आई रेलवे में कानपुर से १०४ मील है तीसरे दर्जे का किराया १ लगता है ॥

## कम्बाकोनाम ।

इस के माने हैं पानी के घड़े का मुंह । मद्रास से करीब १९६ मील के फासले पर जिला तंजोर में वाक़े है पिछले वक़्तों में चोलाराज्य की राजधानी था और विद्या के वास्ते मशहूर था। यहां सब से बड़े मन्दिर का गपरा २१ मंज़िल का है और १६० फुट ऊंचा है । शिवजी के मन्दिर को एक बड़ा अजीब मेहराबदार ३३० फिट लम्बा रस्ता जाता है जिस के दोनों तरफ दुकानें हैं । महामाहम के ताल के गिर्द सीढ़ियां और मन्दिर बने हुये हैं इन में एक बहुत बड़ा और पक्की ईंटों का है । यहां बहुत से बड़े बड़े रथ हैं जिन को यात्राके दिन देवताको बीच में बिठाकर हज़ारों आदमी खेंचते हैं। कहते हैं कि बारहवेंसाल गंगा जी का पानी इस ताल में आजाता है उस मौके पर अनगिनत लोग इस में स्नान करते हैं ॥

कम्बाको नाम जंकशन मद्रास से १९१ मील है तीसरे दर्जेका किराया २६) है कम्बाकोनाम में कई धर्मशाला हैं जिन में दो या तीन दिन तक लोग बिना किराये ठहर सक्ते हैं ॥

## किरांची ।

सिन्ध के किराची ज़िले में बड़ा नगर, छावनी और बन्दर है । छावनी लाहौर से नार्थवैस्टर्न रेलवे के रस्ते ७८२ मील और शहर ७८४ मीलहै तीसरे दरजेका किराया ६)॥ और ६) लगताहै। बी० आई ऐस० एन कम्पनी और ऐम० ऐन० कम्पनी के अगनबोट

हफ्ते में दो बार बम्बई से कांची को आते हैं। डाक का अगनबोट कांची ३८ घण्टे में पहुंचता है ॥

वह नगर बड़े ब्योपार की जगह है। थोड़े बरसों से ब्योपार इतना बढ़गया है कि जहाज़ बनाने और ठहराने की जगह को बढ़ाना पड़ा। शहर और छावनी निरोगी जगह हैं क्योंकि समुद्र की हवा सदा आती रहती है। अपरैल और मई के महीनों में जियादा से जियादा गर्मी ६० दरजे होती है और दिसम्बर में कम से कम ५० दर्जे बर्षा साल में ७ इंच के करीब होती है। कांची के बड़े बड़े मकान अंग्रेज़ी ढंग के हैं वह यह हैं फ़रीरहाल जिस में पुस्तकशाला और अजायब घर हैं। नेपियर बारगें, गिर्जा, सिन्धक्लब, फरीमेसनों का हाल, सरकारी खज़ाना, डाकखाना, तारघर, मेकलोड स्टेशन, इमप्रैस मारकीट (बाजार) अस्पताल, बौलटन का मारकीट, मैस डेनसी हाल मियरवैदर घण्टाघर, बम्बई बैंक, सदर कचहरी और रोमन कैथलिक इसाइयों का बड़ा भारी गिर्जा, । वाटरवर्कस जो १८८२ में खोलागया ६ मील है ॥

किराची में कई होटल और काफलेवालों के लिये एक सराय है॥

---

## करापद्दी ।

करापत्तई अहाता मद्रास में एक छोटा सा गांव है और मद्रास रेलवे का स्टेशन मद्रास शहर से १८८ मील है तीसरे दर्जे का किराया २।≈) लगता है इस जगह राजा रामचन्द्रजी ने खरसूए राक्षस को मारा था ॥

---

## कारईमदई ।

अहाता मद्रास के जिला कोएम्बाटोर सबडिविज़न कोएम्बाटोर

में एक नगर है और मदरास रेलवे की साऊथ वस्टरन लैन पर मदरास से ३२३ मील के फासले पर एक स्टेशन है। मदरास से तीसरे दरजे का किराया ३।=)। यहां विष्णु जी के मानने वालों का एक पगोड़ा है जो श्री रघुनाथ स्वामी देवता के नाम पर है। इस को मदरास अहाते के हिन्दू लोग बहुत पवित्र मानते हैं। मार्च के महीने से रथयात्रा का बड़ा भारी मेला होता है जिसमें १२ हज़ार के क़रीब यात्री अहाते के सब हिस्सों से आते हैं॥

इस मन्दिर की बाबत कहते हैं कि एक ग्वाला राजा की गौयें जंगल में चराया करता था उन में से एक गौ जिस का नाम कर्म्म पसवन था चुपके से अलग हो जाती और अपना दूध जंगल में एक जगह डाल देती। राजा को एक दिन बड़ा क्रोध आया और यह समझकर कि ग्वाला निकाल लेता है। उसने ग्वाले को मारा दूसरे दिन ग्वाला गऊ को देखता रहा और जब वह चली तो उस के पीछे हो लिया और उस को दूध डालते हुए देखकर बहुत गुस्सा हुआ और अपनी कुल्हाड़ी जिस जगह गौ ने दूध डाला था मारी कुल्हाड़ी देवता के सिर पर लगी और लहू निकलने लगा और तलाओं का पानी लाल होगया ग्वला यह हाल देखकर कर डरा और बेहोश हो कर गिर पड़ा जब राजा ग्वाले को ढूंढता उस जगह आया और ग्वाले का हाल देखा देवता उस के सामने आया राजा ने उस जगह मन्दिर बनवा दिया यहां एक शिव जी का भी मन्दिर बड़ा सुन्दर है इस में चार पत्थर के हाथी रक्खे हैं॥

मेले की जगह स्टेशन से पांच मील है बैल गाड़ियां सवारी के लिये मिलती हैं। करईमदई में छै चतरम या धर्मशाला मुसाफ़िरों के आराम के लिये हैं॥

## करेली।

---

जी० आई० पी रेलवे का स्टेशन है। जबलपुर से ६३ मील और तीसरे दरजे का किराया ॥=) है। स्टेशन पर पहले दूसरे दर्जे के मुसाफिरों के वास्ते वेटिंग रूम और स्टेशन के पास डाक बंगला और सरायें है। करेली से ६ मील सागर की सड़क पर बीरमान गांव में नवम्बर और दिसम्बर में या उन महीनों में कार्तिक सुदि पूर्णमा के मौक़े पर यात्री आते हैं और एक मेला होता है जिस को बीरमान मेला कहते हैं। यह मेला १५ दिन रहता है और इसमें व्योपार भी बहुत होता है। एक और मेला माल मण्डी का होता है जिस में व्योपारी और दूसरे लोग बहुत आते हैं॥

---

## करतारपुर।

पंजाब के ज़िला जलंधर में जलंधर शहर से ६ मील और लाहौर से ७२ माल के फ़ासले पर नार्थवेस्टन रेलवे पर एक नगर है। जलंधर से तीसरे दरजे का किराया ७ पैसे और लाहौर से ॥।-)॥ है सिक्ख मत के गुरु साहब यहां रहते हैं इस वास्ते सिक्ख लोग इस नगर को बहुत पवित्र मानते हैं इस जगह की ज़मीन गुरु रामदास को जहांगीर बादशाह से मिली थी और उसके बेटे गुरु अर्जुन ने इस नगर को १५८८ ई० में बसाया था जब अर्जुन यहां आए और अपनी कुटिया बनाने लगे तो एक भूत ने जो एक दरख़्त में रहता था उनको लकड़ी न काटने दी जब तक उस ने बचन न ले लिया कि उस को कोई दिक़ न करेगा बल्कि उसकी पूजा हुआ करेगा॥

अपरैल के महीने में हर साल बैसाखी का बड़ा भारी मेला होता है इस मौक़े पर हज़ारों लोग आते हैं॥

शहर में एक धर्म्मशाला है और बाहर सड़क के ऊपर डाकखाने और थाने के सामने एक सराय है। सवारी मिलती है जालन्धर को भी यक्के रात दिन चलते हैं॥

करतारपुर में अंग्रेजी मिडल स्कूल भी है॥

---

## करतवा सत्यमुनी।

सूबा ईस्टर्न बंगाल और आसाम में जलपईगुरी से २४ मील दक्षिणकी तरफ एक नदीहै जो बोगूलेके पास जाकर हलहुआनदी में मिल जाती है। हिन्दुओं के ख्याल में इस नदी में स्नान करने से अश्वमेध के बराबर पुण्य होता है। कहते हैं इस नदी को शिवजीकी स्त्री पारबती ने बनाया था। यात्री लोग इस नदी को चिलहटी या हलदीबाडी के स्टेशन से जाते हैं जहां से फासला १२ मील है और बैलगाड़ियां सवारी के लिये मिल सकती हैं॥

स्नानघाट के पास कोई सराय या धर्मशाला नहीं और यात्री लोग महाराजा कूचबिहार की बनवाई हुई झोपड़ियों में ठहरते हैं॥

चीलहटी और हलदीबाड़ी ईस्टर्न बंगाल रेलवे के स्टेशन हैं पहला कलकत्ते से २८५ मील है और दूसरा २६२ मील। तीसरे दर्जे का किराया ३॥=)॥ और ३॥)॥ लगता है॥

---

## करनाल।

एक पुराना शहर दिल्ली अम्बाला कालका रेलवे पर कलकत्ते से ६७६ मील, दिल्ली से ७६ मील और अम्बाला छावनी से ४७ मील के फासले पर वाकेहै और जिला करनाल का सिविल सदरमुकामहै। इस को राजा करना ने जो पाण्डों और कौरोंमें कुरुक्षेत्र की बड़ीभारी लड़ाई में कौरों का मददगार था इस शहर को बसाया था इसी शहर

में ईरान के बादशाह नादिरशाह ने मुगल बादशाह महम्मद शाह को १७५६ ई० में शिकस्त दी थी बाद में यह शहर राजा जींद और मरहट्टों के हाथ में आया फिर मरहट्टोंको लद्वा के राजा गुरदित्तसिंह ने निकाल दिया। १८०५ में राजा गुरदित्तसिंह से सर्कार अंगरेजी ने ज़ब्त कर लिया। किला जो कई साल तक छावनी के काम में आता रहा अब स्कूलकेकाममें आताहै। काबुलका मशहूर अमीर दोस्तमहम्मद खां कलकत्ते जाते हुए १८४० में यहां ६ महीने नजरबन्द रहा था॥

१६०१ में करनाल की आबादी १४६०६ हिन्दू, ८३६७ मुसलमान और २८३ ईसाई वगैरा थे। जिले की पैदावारी का व्योपार होता है देशी कपड़े, कम्बल और बूट भी यहांबहुत बनते थे अब पहले से कम बनते हैं। कर्नाल में सर्कारी घोड़े पाले जाते थे अब वहां से स्टड उठा लिया गया है॥

शहर में मुसाफरों के लिये कई सरायें हैं। यक्के बग्घियां सवारी के लिये हर वक्त मिलते हैं॥

कलकत्ते से तीसरे दर्जे का किराया ६) हैं॥

---

## कर्णगढ़।

अहाता बंगाल जिला भागलपुर में भागलपुर नगर के पास पहाड़ी है जिसपर शिवजी के कई मन्दिर हैं इन में ४ मठ हैं कार्तिक महीने के पिछले दिन बहुत लोग यात्रा के लिये आते हैं। मन्दिर में महादेवजी या शिवजी के कई आसन हैं इन में से एक जबलपुर के पास से नर्बदा दरिया से पत्थर लाकर बनाया गया है और इस सबब से लोग औरों से इस को अच्छा जानते हैं। इस जगह का नाम राजा कर्ण के नाम पर है जो ब्राह्मणों को बहुत दान पुण्य करता था लोग इस जगह को राजा कर्ण के महल की जगह कहते हैं।

स्टेशन के पास ३ धर्मशाला हैं एक जैनियों की जिस को अज़ीमगंज के रायधनपतिसिंह बहादुर ने बनाया है इस में २०० लोग ठहर सक्ते हैं, दूसरी तोरमल की जिस में १०० आदमी ठहर सक्ते हैं और तीसरी भद्रमल की यह धर्मशाला टेशन से ६०० गज़ के फ़ासले पर है और उस में ३०० आदमी ठहर सक्ते हैं।

भागलपुर ईस्टइण्डियन रेलवे में कलकत्ते से २६५ मील है तीसरे दरजे का किराया ३)। है

## कर्ण पयाग।

सूबा आगरा और अवध के ज़िला गढ़वाल में एक गांव है और पिंडर और अलक नन्दा के संगम पर वाक़े है। हिमांचल जाने वाले यात्रियों के लिये पांच ठहरने वाली पवित्र जगहों में से एक बड़ा मन्दिर शिवजी की स्त्री उमा का है। कहते हैं कि इस को धर्म के सुधारने वाले शंकराचार्य ने नौवीं सदा ई० में नए सिरेसे बनाया था। पिंडर दरिया पर लोहे का पुल बना हुआ है॥

कर्णप्रयाग में धर्मशाला हैं और खाने पीनेकी वस्तु मिल जाती हैं॥

हरिद्वार से भी कर्णप्रयाग जाते हैं हरिद्वार में टट्टू और झम्पान सवारी के लिये किराये पर मिलते हैं॥

हरिद्वार कलकत्ते से ९२१ मील और सहारनपूर से ४६ मील हैं तीसरे दरजे का किराया ८॥।-) और ॥=)। लगता है॥

## कारंज तीर्थ।

इलाक़ा बरार ज़िला अकोला में वाक़े है। बम्बई से बदनेरा जकशन और वहां से अमरावती जाते हैं बम्बई से अमरावती ४१६ मील है और तीसर दरजे का किराया ४।-)। है। कौरंज ऋषि जो अपने पूर्व जन्म के पापों से तकलीफ़ पा रहे थे उन्होंने इसी

जगह तपस्या की थी और देवी ने बर दिया तो पापों से मुक्ति हुई इस लिये हिन्दुओं के नज़दीक यह बडा पवित्र तीथ है यहां पर नीले रंग का महादेव जी का मन्दिर है और भी कई प्राचीन मन्दिर हैं कहते हैं कि जिस किसी को आसेब हो मन्दिर के ताक़ों में सिर रखने से दूर होजाता है ॥

तांगे और बैल गाड़ियां सवारी के लिये अमरावती में किराये पर मिलती हैं ॥

करंजेमें एक बंगला और बड़ी भारी और अच्छी धर्मशाला है ॥

---

## कलानौर ।

सूबा पंजाब के ज़िला गुर्दासपुर में गुर्दासपुर शहर से १७ मील दक्खिन की तरफ़ एक नगर है। चौदवीं, पंद्रहवीं और सो लवीं सदी ई० में यह नगर बड़ी रौनक़ पर था। इसी जगह अकबर को उस के बाप के मरनेकी खबर मिली थी और इसी जगह वह गद्दी पर बैठा था॥

मार्च के महीने में शिवरात्री तेहवार को यहां दो दिन तक मेला होता है जिस में ५ हज़ार लोग आते हैं ॥

यह नगर नार्थवैस्टर्न रेलवे के बटाला स्टेशन से १० मील है बटाले में यक्के सवारी के लिये मिलते हैं ॥

बटाला अमृतसर से अमृतसर पठानकोट लाइन पर २४ मील है तीसरे दरजे का किराया ।)॥ लगता है ॥

कलानौर में देशी लोगों के टिकने के लिये एक सराय है।

---

## कलकत्ता ।

हिन्दुस्तान की राजधानी और सब से बड़ा तिजारती शहर हुगली दरिया पर बम्बई से जी० आई० पी और बङ्गाल नागपुर के

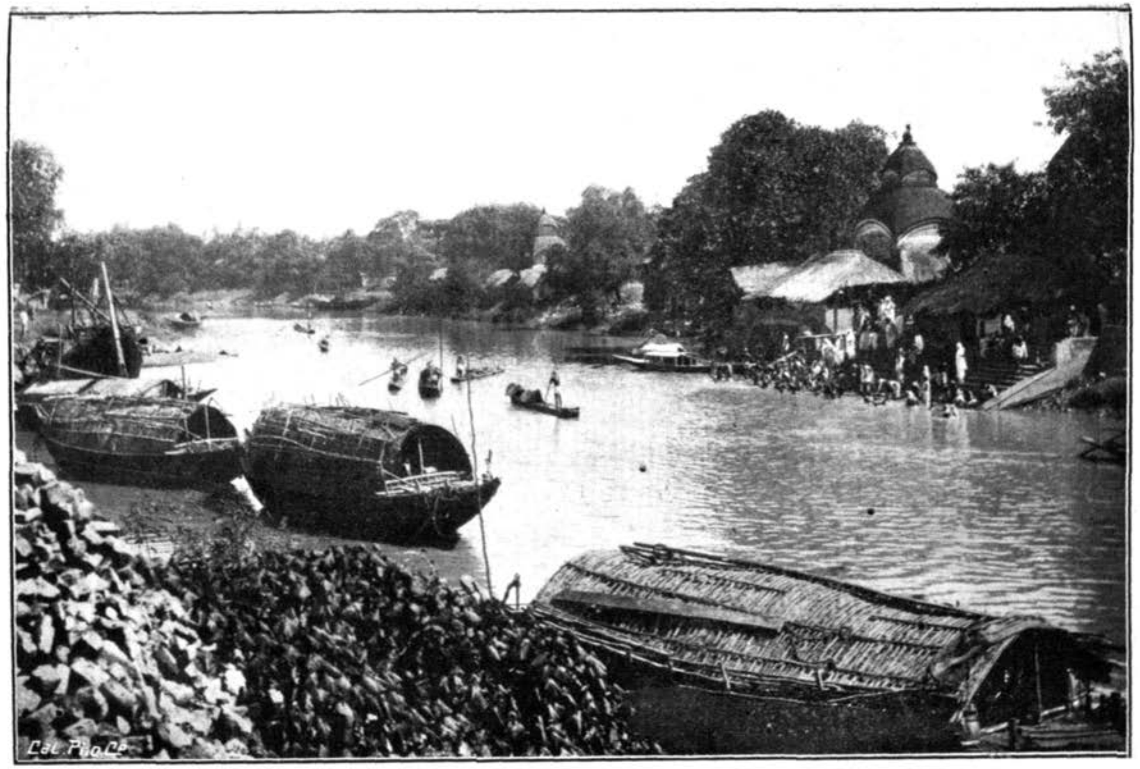



*Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.*

कालिघाट—कलकत्ता ।

इति ॥